

Sā.) येषु सुधिता घृताघो हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः RV. 1,167,3. मि-
म्यन् (= पुनः पुनरकतो गच्छति DURGA) येषु रोदसी नु देवी 6,50,5. सा-
धारण्येव मरुतो मिमित्तुः (so v. a. संमिमित्तुः) 1,167,4. pass.: अम्यन्ति
(अप्रापि Comm. zu TS.) सन् सद्ने पृथिव्याः es steht ein Bau auf der
Erde Grund 6,11,5.

— अय् fernhalten: अयो सु म्यन् वरुण भियसं मत् RV. 2,28,6.

— अय् gehalten werden, sich befinden: अयस्मिन्कस्ते नर्या मिमित्तुः in
dessen Hand Männergaben liegen RV. 6,29,2. नर्याः Padap., नर्यो हि-
ता रायः Sā., wir nehmen n. pl. an; vgl. 1,72,1. 3,34,5. 7,43,1. Dun-
kel ist uns: अय्ये ते पादा उव अय मिमित्तुः RV. 6,29,3.

— नि halten: नि वज्रमिन्द्रे हरिवाग्निर्मित्तन्मन्धसा मदेषु वा उवाच
RV. 7,20,4. उभा ते वाहू वर्षणा नि या वज्रं मिमित्तुः 8,30,18. med.:
इन्द्रे नि वृषा हरिता मिमित्तिरे Indra hat an sich 10,96,3.

— सम् zusammenhalten, sich zusammenthun: समान्या मरुतः सं मि-
मित्तुः RV. 1,163,1. स्वया मृत्वा मरुतः सं मिमित्तुः 5,38,3. med.: अ-
य्ये के भानुभिः सं मिमित्तिरे (= संगच्छते DURGA) 1,87,6.

अन् (vgl. 1. मर्त्तु, मूर्त्तति, मूर्त्तति Duātup. 17,12 (संघाते). striegeln, rei-
ben: स्तुकाविना मृता शीया चतुर्णाम् strigle die Häuse des mähigen
Viergespans RV. 8,63,13. Sā. liest वृता: in den Zusammenhang würde
besser passen, wenn मृता als 1. imperat. für मृताणि gefasst werden
dürfte, wie ähnliche Formen im Zend. पौशुना च अन्ति bestreichen LA-
LIT. ed. Calc. 323,14. पार्श्वानि चान्ये शकलानि तत्र दृडः पशूनां घृत-
न्तितानि (च घृतन्तितानि die neuere Ausg.) HARIV. 8442. Vgl. मन्.

— caus. अन्त्यति und मूर्त्त्यति Duātup. 32,119 (अन्तो d. i. स्नेहने; auch
स्नेहने und संघाते). bestreichen: द्वायितेन रसेन लोक्यात्राणि अन्त्यतिवा
होरयति Burn. Intr. 363, N. 2. Schol. zu Kāṭh. Ça. 378,1. 9. 383,2 v. u.
391,13. 640,1.

— अभि einreiben, salben: अयास्य तैलेनाङ्गानि सर्वाण्येवाभ्यमन्तत
(wohl nicht zu 1. मर्त्तु MBu. 13,1486. caus. dass.: तेनोच्छिष्टेन गात्राणि
शिरश्चैवाभ्यमन्तयम् 7426.

— नि sich reiben: अन्त्येयां नि मिम्लुर्गृष्टयः RV. 1,64,4.

— सम् einreiben: संघन्ति Suçra. 2,67,11.

अन् 1) adj. (von अन्त्) zerreibend in तुवि०. — 2) m. das Verstecken
der eigenen Gebrechen TRIK. 1,1,131; vgl. मन्.

अन्त्यवन् (अन् + कृ०) adj. zerreibend, zerstörend: Indra RV. 8,50,
10. = वधकर्त्तरु Sā.

अन्त्या (von अन्त्) n. 1) das Einreiben, Salben Duātup. 29,21. 32,119.

— 2) Einreibemittel, Salbe, Oel H. 416. Suçra. 2,66,20. पाद० Sādh. P. 4,38,6.

अद्, अदते = मर्द्द reiben Duātup. 19,5.

— प्र aufreiben: नेत्यमूर्त्तप्रअद्रे (infm.) करवामहे Çat. Br. 4,4,3,11.

— वि mürbe machen: पणोश्चिद्धि अद् मनः RV. 6,53,3.

अद् (von अद्) in ऊर्णाअद् (unter ऊर्णाअद्).

अद्य् (von मृड्; vgl. P. 6,4,155, Vārti. und Pat.), अद्यपति glätten:
पुनमेव तन्मद्यपति TS. 6,1,4,4. अमद्यत् P. 7,4,93. Vop. 18,2.

अदस् (von अद्) in ऊर्णाअदस्

अदिमन् (von मृड्) m. Weichheit, Milde, Sanftmuth P. 6,4,161, Sch.
Spr. 1043. Rāga-Tar. 8,566.

अदिष्ठ superl. und अदीयस् compar. zu मृड् P. 6,4,161, Sch. Vop. 7,

59. (स्वरितम् पूर्वं पूर्वं दृढतरं अदीयो यद्यदुत्तरम् AV. Prāt. 3,54, Sch.
आतन n. Cyperus rotundus ÇABDAK. im ÇKDr.

अित्, अित्यति zerfallen, sich auflösen: (गर्भः) अयास्यन्चित्यत् Çat. Br.
3,2,1,31.

— निम् dissolvi; davon निर्भेतुक zerfallend, vergehend: यत्र वा अयो
वीव वर्तते तदोषधयो ज्ञायते ऽथ यत्रावतिष्ठते निर्भेतुकास्तत्र भवति wo
das Wasser abfließt, spriessen die Kräuter; wo es stehen bleibt, lösen
sie sich auf, verfaulen sie, Pāṇḍav. Br. 13,9,16. Hiernach u. निर्भेतुक
zu verbessern.

— वि zerfallen, zerbröckeln: यथामपात्रमुदकं आसिक्ते विअित्येत् एवं
कैव ते विअित्येयुः Çat. Br. 12,1,1,23. (स्थाणुः) पूयेद्वा वि वा अित्येत्
verfault oder geht in Stücke 9,3,2,14.

अुच्, अौचति Duātup. 7,13 (गत्यर्थ). aor. अमुचत् und अमोचति P. 3,1,
58. Vop. 8,38. 38. — Vgl. अुच्.

— नि untergehen (von der Sonne): उयन्नादित्यः, निमोचन् AV. 2.32.
1. Ait. Br. 3,44. TS. 5,4,6,6. आदित्यः पुर उदेति पश्चान्निमोचति Kāṭh.
23,8. 31,15. Taitt. Ār. 5,10,4. Vgl. निमृत्ति, निमृच्.

— अभिनि untergehen über (acc.): यस्याग्निमनुद्धृतं सूर्यो ऽभिनिमोचति
TBr. 1,4,4,1. TS. 6,4,2,1. दीनितं नान्यत्र दीनितविमितात्सूर्यो ऽभि-
निमोचेत् Kāṭh. 23,2. सूर्याभिनिमृक्तं derjenige, welchen die untergehende
Sonne schlafend findet, TBr. 3,2,8,11. सुते यस्मिन्नस्तमेति सुते यस्मि-
न्द्रेति च । अंशुमानभिनिमृक्ताभ्युदितौ तौ यथाक्रमम् || Cit. in TS. Comm.
1,144. fehlerhaft अभिनिमृक्त M. 2,221. AK. 2,7,54. H. 860. KULL. zu
M. 2,220.

अुच्, अुच्चति = अुच् Duātup. 7,11.

अेद्, अेटति v. l. für अेद् Duātup. 9,4.

अेद्, अेटति (उन्मादे) Duātup. 9,4.

— अा caus. wiederholen: एतदेव पदा वाक्यमाभेदयति देवराट् MBu. 3.
10383. आभेदित wiederholt, n. Wiederholung; bei Pāṇini das zweite
Wort der Wiederholung, AK. 1,1,5,12. H. 267. HARAJ. 1,153. VS. Prāt.
1,146. 4,3. 3,18. 6,3. AV. Prāt. 4,40. ०समास 2,62, Sch. P. 8,1,2. 6.
1,99. fg. 8,2,93. 103. 3,12.

— उपनि med. erfreuen, beglücken (vgl. मर्द्द): स य एतमेवं विद्वाना-
दित्यं ब्रह्मेत्युपास्ते ऽभ्यासो ह यदेनं साधवो घोषा अा च गच्छेयु रूप च
निम्रेडेरनिम्रेडेरन् Kūānd. Up. 3,19,4.

अोकै (von अुच्, m. N. eines verderblichen Agni AV. 5,31,9. 16,1,3. 7.
auch wohl 2,24,3 N. einer Flamme. — Vgl. अुन्मोकै in den Nachträgen.

अक्त partic. gestohlen Buçair. im ÇKDr. Sicher fehlerhaft.

अन्, अन्त्यति (हिन्द्रे) Duātup. 32,119, v. l.

आ, आयति Duātup. 22,8 (गात्रविनामे, कात्तिसंनये). आयते MBu. 12,
6831. Spr. 1143. आत्ति MBu. 3,13683. मसौ, मसौ (P. 6,1,45, Sch.), अयासीन्:
आयात् und आयात् (vgl. P. 6,4,68); partic. आत् (in der älteren Sprache)
und आन (vgl. P. 8,2,43). welken: आयत्योषधयः Çat. Br. 1,3,4,5. 3,
6,4,10. 8,1,4,1. 7,2,14. MBu. 3,15455. R. 3,77,24. ऊष्मनो आयते
पर्णं लकफलं पुष्पमेव च । ग्लायते (आयते ed. Bomb.) शीर्यते चापि MBu.
12,6831. वृत्ताश्च न आत्ति तथैव भयाः 3,15683. मसौ Rāga-Tar. 1,62.

आनअन्त् verwehlt, welk MBu. 3,2215. Spr. 440. UttaraRāmā. 17,9.
LA. (II) 91,22. अज्ञानान्यपि तत्रासन्कुमुमानि MBu. 13,2357. HARIV.